आजादी @75

क्रांतिकारियों की शौर्यगाथा

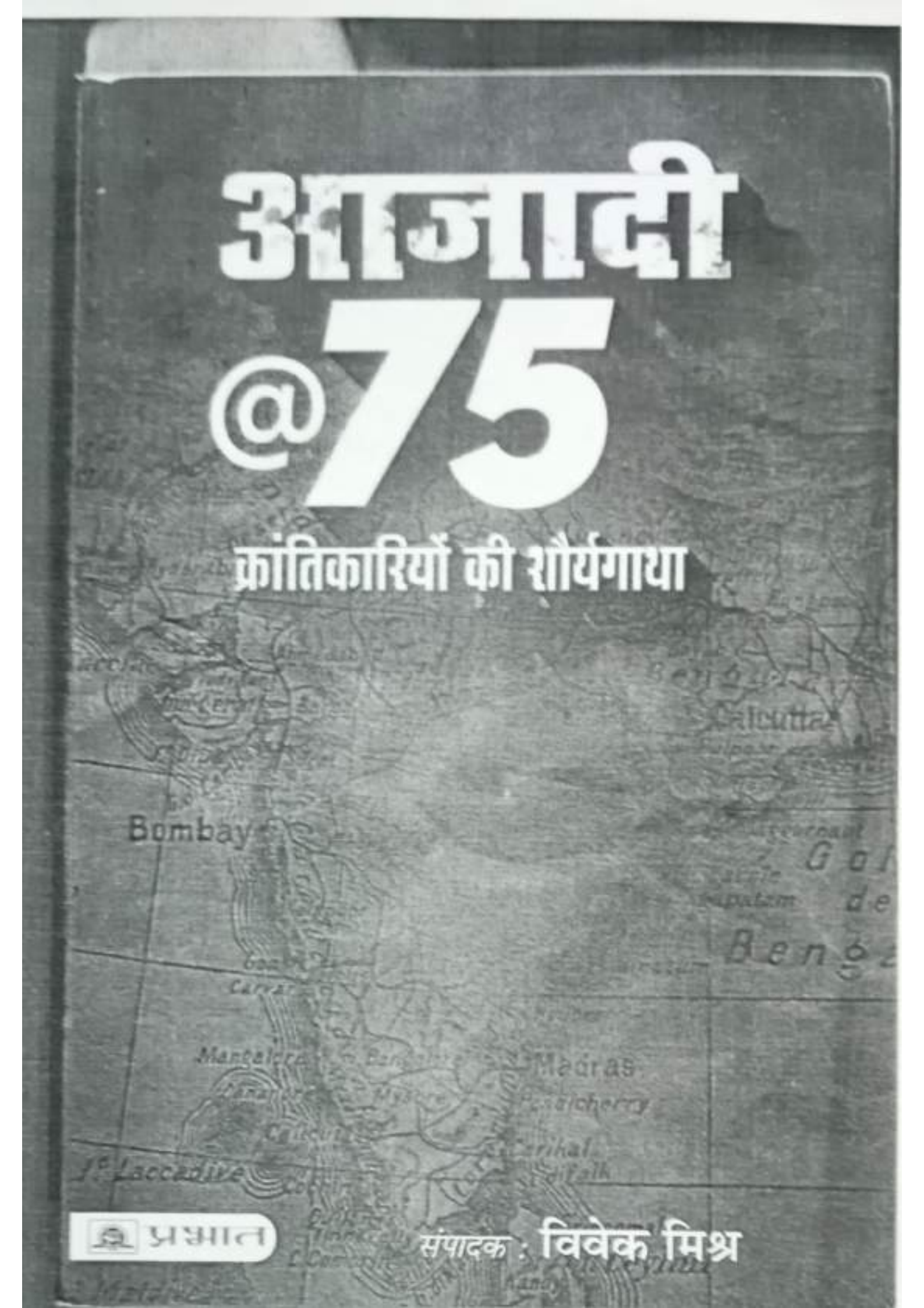

प्रभात

संपादक : विवेक मिश्र

प्रकाशक

प्रभात पेपरबैक्स

प्रभात प्रकाशन प्रा. लि. का उपक्रम

4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

फोन : 23289777 • हेल्पलाइन नं. : 7827007777

इ-मेल : prabhatbooks@gmail.com ❖ वेब ठिकाना : www.prabhatbooks.com

संस्करण

प्रथम, 2022

सर्वाधिकार

सुरक्षित

मूल्य

पाँच सौ रुपए

मुद्रक

आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

★

AZADI @ 75 : KRANTIKARIYON KI SHAURYAGATHA

Ed. Shri Vivek Mishra

Published by **PRABHAT PAPERBACKS**

An imprint of Prabhat Prakashan Pvt. Ltd.

4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-110002

ISBN 978-93-5521-184-2

₹ 500.00

67. रानी गाइदिन्ल्यू —वीरेंद्र परमार 390
68. शांति घोष —आरती शर्मा 396
69. शहीद राजनारायण मिश्र —विवेक मिश्र 400
70. रामफल मंडल —बिनोद बिहारी 403
71. कनकलता बरूआ —डॉ. निशा नंदिनी भारतीय 408
72. हेमू कालाणी —डॉ. नेहा कल्याणी 411
73. भागीरथ सिलावट —डॉ. संध्या सिलावट 415
74. थेंगफाखरी —पूजा मिश्रा 422
75. गोंड राजा शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह —डॉ. नुपूर निखिल देशकर 427

72

हेमू कालाणी

के स्वतंत्रता संग्राम के स्वर्ण इतिहास अनेक शहीदों की कहानियाँ लिखी गई कई ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनके नाम से भी नहीं हैं। जिस तरह जगमगाते महलों एवं की चकाचौंध तो सभी देखते हैं, किंतु जानता कि उन महलों की चमक बरकरार कितने मूक पत्थरों ने अपनी बलि देकर की नींव को मजबूत बनाया होगा। ठीक उसी के 75 वर्षों बाद भी हमारी युवा पीढ़ी, जनता इस आजादीरूपी महल की नींव के मूक बलिदान से अनजान है।

ऐसे मूक बलिदान करनेवाले वीरों में सिंधी समुदाय के अमर शहीद हेमू कालाणी का गणनीय है। 23 मार्च, 1923 को वर्तमान पाकिस्तान के सिंध के सक्खर गाँव कालाणी एवं जेठीबाई के घर जन्मे हेमू बचपन से ही विलक्षण थे। उनके पिता और इज्जतदार खानदान से थे। उनके ईंटों के भट्ठे थे। यहाँ तक कि कुछ अधिकारी भी उनका बहुत सम्मान किया करते थे, किंतु हेमू का परिवार बहुत था। उनके परिवार में बच्चों को भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों के किस्से सुनाए परिणामतः देशप्रेम बचपन से ही उनमें समाहित था। हेमु कालाणी के चाचाजी कालाणी कांग्रेस के कार्यकर्ता थे। हेमू बचपन से ही उनके कार्यों एवं देशप्रेम से थे। उन्हीं के कारण हेमू के मन में देश के लिए कुछ कर-गुजरने की भावना हुई। जिस प्रकार शहीद भगत सिंह अपने चाचा अजीत सिंह से प्रभावित हुए, उसी पर उनके चाचा श्री मंधारामजी के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा। यह एक संयोग शहीद भगत सिंह की पुण्यतिथि और हेमू कालाणी की जन्मतिथि एक ही है—23 जिस समय भगत सिंह शहीद हुए, उस समय हेमू की उम्र मात्र 8 वर्ष थी।

शिक्षा-दीक्षा

पाँच वर्ष की आयु तक उनकी शिक्षा उसी गाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई, इस विद्यालय में कक्षा 4 तक ही पढ़ाई होती थी, आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने सक्खर के तिलक हाई स्कूल महाविद्यालय में प्रवेश लिया। हेमू पढ़ाई में जितने होशियार थे, उतने ही निपुण वे खेलकूद में भी थे। वे विद्यालय में पढ़ाई के साथ ही खेल में भी हमेशा अव्वल रहते थे। वह अच्छे तैराक, साइकिल चालक एवं निपुण धावक भी थे। खेलों में उन्हें कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट, फुटबॉल और कुश्ती का शौक था, वे अपने चाचा से कुश्ती के सारे दाँव-पेच सीखा करते।

कहते हैं, न पूत के लक्षण पालने में दिखाई देते हैं। उसी तरह हेमू बचपन से ही साहसी, देशभक्त और अन्याय के विरोधी थे। गाँव में जब अंग्रेज अधिकारी अपने लश्कर के साथ निकलते तो गाँव के लोग डर के मारे अपने घरों व दुकानों के दरवाजे व खिड़कियाँ बंद कर देते थे, मगर वो नन्हा सा निडर बालक हेमू उन अफसरों के सामने उन पर तंज कसता और अपने दोस्तों के साथ यह गीत गाते हुए घूमता—

जान देना देश पर यह वीर का काम है।
मौत की परवाह न कर, जिसका हकीकत नाम है।

उनके गीत लोगों में स्वतंत्रता व देशप्रेम के भाव पैदा करते। लोग उनकी निडरता और साहस के कायल थे। अंग्रेज अधिकारी क्रोधित होते, उनके पिता को चेतावनी देते और बालक समझकर उन्हें माफ कर देते।

स्वतंत्रता के कार्यों से जुड़ाव

एक बार उनके पिता को अंग्रेज अधिकारी पकड़कर ले गए, जब वो घर आए तो माता रो रही थी। कारण जानकर उन्होंने अपने पिता को छुड़वाकर लाने की कसम खाई, तब बंदूक लेकर वो अपने एक साथी के साथ पिता को छुड़ाने निकल पड़े, तब उनके एक शिक्षक ने उनको समझाया कि अकेले जाना ठीक नहीं है। जब तक हमारे पास एक मजबूत संगठन नहीं होगा, तब तक हम विवश हैं। चाहकर भी हम अंग्रेजों से जीत नहीं पाएँगे। उनकी बातों की गहराई को समझते हुए जल्दी ही वे स्वराज्य सेना मंडल दल का हिस्सा बने और स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए। बाद में वे इस दल की रीढ़ की हड्डी बनकर उभरे। हेमू कालाणी भी बचपन से ही स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का प्रचार करने लगे थे। अपने साथियों के साथ मिलकर वे विदेशी कपड़ों का तिरस्कार करने के लिए लोगों में चेतना जगाने का कार्य करते। वे विदेशी कपड़ों की होली जलाते। अंग्रेज सरकार पर किए जानेवाले बम हमलों के समूह में वे शामिल हो गए और अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों से कई बार उन्होंने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए।

अमर शहीद हेमू कालाणी का भारत की स्वतंत्रता में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

नकी शिक्षा उसी गाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई, इस
ई होती थी, आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने सक्खर के
में प्रवेश लिया। हेमू पढ़ाई में जितने होशियार थे, उतने ही
द्यालय में पढ़ाई के साथ ही खेल में भी हमेशा अव्वल
किल चालक एवं निपुण धावक भी थे। खेलों में उन्हें
ल और कुश्ती का शौक था, वे अपने चाचा से कुश्ती

पालने में दिखाई देते हैं। उसी तरह हेमू बचपन से ही
विरोधी थे। गाँव में जब अंग्रेज अधिकारी अपने लश्कर
डर के मारे अपने घरों व दुकानों के दरवाजे व खिड़कियाँ
। निडर बालक हेमू उन अफसरों के सामने उन पर तंज
यह गीत गाते हुए घूमता—

ीर का काम है।
जिसका हकीकत नाम है।

ता व देशप्रेम के भाव पैदा करते। लोग उनकी निडरता
। अधिकारी क्रोधित होते, उनके पिता को चेतावनी देते
कर देते।

ग्रेज अधिकारी पकड़कर ले गए, जब वो घर आए तो
उन्होंने अपने पिता को छुड़वाकर लाने की कसम खाई,
थी के साथ पिता को छुड़ाने निकल पड़े, तब उनके एक
ले जाना ठीक नहीं है। जब तक हमारे पास एक मजबूत
बेबस हैं। चाहकर भी हम अंग्रेजों से जीत नहीं पाएँगे।
ते हुए जल्दी ही वे स्वराज्य सेना मंडल दल का हिस्सा
त क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल हो गए। बाद में वे
उभरे। हेमू कालाणी भी बचपन से ही स्वदेशी वस्तुओं
। अपने साथियों के साथ मिलकर वे विदेशी कपड़ों का
तना जगाने का कार्य करते। वे विदेशी कपड़ों की होली
ानेवाले बम हमलों के समूह में वे शामिल हो गए और
ई बार उन्होंने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए।
ा भारत की स्वतंत्रता में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में हेमू ने सक्रिय योगदान किया। इस आंदोलन के दमन के लिए अंग्रेज सरकार ने यूरोपियन बटालियन को सिंध भेजने का निर्णय किया। वह हथियारबंद बटालियन जिस रेल से आनेवाली थी, वह रेल हेमू के कस्बे रोहड़ी से गुजरेगी, यह बात पता चलते ही उन्होंने एक योजना बनाई। उन्होंने फिशप्लेट उखाड़कर रेल को रोकने की योजना बनाई, ताकि रेल न आ सके, किंतु उनके पास अपनी योजना को अंजाम देने के लिए कोई औजार नहीं था और समय भी कम था, इसलिए और कोई रास्ता न देखकर स्वतंत्रता के उन वीरों हेमू और उनके साथियों ने 23 अक्तूबर, 1942 की रात अपने हाथों से ही अपनी योजना को अंजाम देने का दृढ़ निश्चय किया। वे पूरी मेहनत से काम कर रहे थे, पर काम पूरा होने से पहले ही ब्रिटिश सैनिकों की नजर उन पर पड़ गई, अब हेमू पर दायित्व था अपने साथियों को बचाने का, पर अपने साथियों को बचाने के प्रयास में हेमू ब्रिटिश सैनिकों के हत्थे चढ़ गए। जेल में 18 वर्षीय हेमू पर भीषण अत्याचार किए गए, ताकि वो अपने साथियों के नाम बता दे, किंतु अपने कार्यों और जिद से अंग्रेजों के दाँत खट्टे करनेवाले अंग्रेजों के अत्याचार सहते हुए वे चट्टान की तरह अडिग बने रहे।

जिस उम्र में युवा प्यार व नौकरी के सपने देखते हैं, उस उम्र में देश के लिए मिटने का जज्बा लिये हेमू कालाणी को अंग्रेज सरकार ने फाँसी की सजा सुनाई तो अंग्रेजों के इस फैसले के खिलाफ सिंध भर से आवाजें उठीं। सिंध के तत्कालीन गणमान्य लोगों ने एक याचिका दायर की और वायसराय से हेमू को फाँसी की सजा न देने की अपील की, पर वायसराय ने शर्त रखी कि हेमू अपने क्रांतिकारी साथियों के नाम बता दे। यह शर्त हेमू ने अस्वीकार कर दी। हारकर उनके वकील पीरजादा अब्दुल सत्तार उनके चाचाजी के साथ एक माफीनामे पर उनके हस्ताक्षर करवाने आए, जिसमें इस शर्त पर उन्हें माफ करने की बात कही गई थी कि वो अपने साथी क्रांतिकारियों के बारे में सारी सूचनाएँ पुलिस को दे देंगे। उनकी माँ और परिवार जनों ने रो-रोकर उन्हें मनाने की कोशिश की, पर जिद के पक्के हेमू ने ऐसा करने से मना कर दिया। माँ पुकारती रही, पर भारत माँ की आन की कीमत पर उस देश भक्त को अपनी जान मंजूर न थी, इसलिए मातृभूमि की शान के सामने उस दीवाने ने अपनी सांसारिक माँ के आँसुओं को नजरअंदाज कर दिया। आदर्श, त्याग और देश के लिए बलिदान होने का जज्बा दिल में सँजोए हेमू ने अपनी माँ के इसरार को ठुकराकर उनके सपनों को बिखेर दिया। आखिर अंग्रेज सरकार ने उन्हें 21 जनवरी, 1943 को फाँसी पर चढ़ाने का फैसला किया। अपने को फाँसी दिए जाने की खबर सुनकर उनका वजन आठ पौंड बढ़ गया। हेमू की माँ उनकी शहादत पर गर्व करते हुए अपने आँसू रोकना चाहती थी, किंतु ममतामयी आँखों से आँसू छलक ही आए। ममता और निडरता का नजारा देख अन्य कैदी रो दिए, किंतु हेमू की आँखों में एक अनोखी चमक थी। माँ के चरणों की वंदना करते हुए हेमू ने कहा कि माँ, मेरा बचपन का सपना पूरा हुआ, अब माँ भारती को आजाद होने से कोई नहीं रोक सकता। हेमू ने जाते-जाते भी यही संदेश दिया

कि एक हेमू के डूबने से दुनिया नहीं रुक सकती। मेरे देशवासियो अपने मन में आशा का दीपक जलाकर जनता के मन में आजादी के उत्साह को फैलाओ और अपनी मातृभूमि को इन गोरों की बेड़ियों से आजाद करवा लो।

जब फाँसी से पहले उनकी आखिरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने फिर से भारत में जन्म लेने की इच्छा बताई और इनकलाब जिंदाबाद के नारे लगाते हुए हँसते-हँसते फाँसी पर लटक गए। इस तरह मात्र 19 वर्ष की आयु में ही माँ भारती का यह सपूत स्वतंत्रता की बलिवेदी पर बलिदान हो गया। उस अमर शहीद का काम एवं नाम सदैव भारत एवं सिंधी समुदाय को गौरवान्वित करता रहेगा।

किंतु देशप्रेम के जोश से सराबोर हेमू की जन्मभूमि और कर्मभूमि भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान में होने के कारण वहाँ उनका कोई स्मारक नहीं बन सका, बल्कि सुक्कूर के हेमू कालाणी पार्क का नाम भी बदलकर कासिम पार्क कर दिया गया।

यद्यपि स्वतंत्रता संग्राम में भारत माता के अनगिनत सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति देकर भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद करवाया, पर देश की आजादी में जिन वंदनीय वीरों ने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया, उनमें सबसे कम उम्र के बालक अमर शहीद हेमू कालाणी को भारत देश कभी भुला नहीं पाएगा। वर्तमान में भले ही हेमू जैसे अनगिनत क्रांतिकारी गुमनामी के अँधेरे में खो गए हैं, फिर भी हम भारतीय आशान्वित हैं, क्योंकि हमारे आदर्श, हमारे महानायक हमारे दिलों में बसते हैं। आम आदमी आज भी त्याग और वीरता में भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों को ही अपना आदर्श मानते हैं।

इन बलिदानियों की थाती हम सबकी धरोहर है और हमारी जिम्मेदारी है। इस धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की भी जरूरत है। हमें अपनी विरासत का सम्मान करने की, अंत में स्वतंत्रता के उन चितेरों को कोटिश: नमन एवं श्रद्धांजलि!

संदर्भ सूची—

1. बहुआयामी जीवन के धनी—गोपाल प्रसाद व्यास—डॉ. संतोष माटा, प्रभात प्रकाशन
2. भारत माता मंदिर, स्वतंत्रता सेनी संग्रहालय, इंटरनेट
3. आओ शहीदे वतन हेमू कालाणी—पत्रकार सुरेश चंद्र रोहरा
4. सिंधी पत्रिका

—डॉ. नेहा कल्याणी
सहायक व्याख्याता
गो. से. अर्थ-वाणिज्य महाविद्यालय, नागपुर
ई-मेल : kalyanineha00@gmail.com

□